MADINE KI MACHHLI (HINDI)

म-दनी चेनल
देखते रहिये

रिसाला नम्बर :97

मदीने की मछली

तख़रीज शुदा

- ईसार की ता'रीफ़ 3
- माल से तीन त़रह के फ़वाइद मिलते हैं 13
- बच्चे के रोज़े का अहम तरीन मस्अला 21
- अपनी ज़रूरत की चीज़ दे देने की फ़ज़ीलत 26
- ईसार का सवाब मुफ़्त लूटने का नुस्ख़ा 27
- दम तोड़ते वक़्त भी ईसार 33
- ईसार की म-दनी बहार 36
- लिबास के 14 म-दनी फूल 39

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

مكتبة المدينه
(دعوت اسلامی)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मदीने की मछली

येह रिसाला **(मदीने की मछली)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मदीने की मछली[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (44 सफ़ह़ात) आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़ात पर दूसरे मुसल्मान की ख़ातिर ईसार का जज़्बा बढ़ेगा और हुसूले जन्नत का सामान होगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

क़ियामत के दिन किसी मुसल्मान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराज़ू) में हलकी हो जाएंगी तो **सरवरे काएनात,** शाहे मौजूदात, **महबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक परचा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे तो उस से नेकियों का पलड़ा वज़्नी हो जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप कौन हैं ? **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : मैं तेरा नबी **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह **दुरूदे पाक** है जो तूने मुझ पर पढ़ा था। (کتاب حسن الظّن باللّٰه لابی بکر بن ابی الدنیا ج ۱ ص ۹۲ حدیث ۷۹ مُلَخَّصاً)

हम ने ख़त़ा में न की तुम ने अ़त़ा में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदीना

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (5 रबीउ़ल ग़ौस सि. 1432 हि./ 10-3-11) में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बीमार थे, उन को भुनी हुई **मछली** खाने की ख़्वाहिश हुई । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : तलाशे बिस्यार (या'नी काफ़ी ढूंडने) के बा'द मुझे डेढ़ दिरहम की एक **मछली मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मिल गई, मैं ने उसे भून कर ख़िदमते सरापा सख़ावत में पेश कर दी, इतने में एक साइल आ गया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : नाफ़ेअ़ ! येह **मछली** साइल को दे दो । मैं ने अ़र्ज़ की : आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इस की बड़ी ख़्वाहिश थी इस लिये कोशिश कर के येह **मदीने की मछली** मैं ने ख़रीदी है आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इसे तनावुल फ़रमा लीजिये मैं इस **मछली** की क़ीमत साइल को दे देता हूं । फ़रमाया : नहीं तुम येह **मछली** ही इस को दे दो । चुनान्चे मैं ने वोह **मदीने की मछली** साइल को दे दी और फिर पीछे जा कर उस से ख़रीद ली और आ कर ह़ाज़िर कर दी । इर्शाद फ़रमाया : येह **मछली** उसी साइल को दे दो और जो क़ीमत उस को अदा की है वोह भी उसी के पास रहने दो । मैं ने **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है : **जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर** (किसी और को) **तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है ।** (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۱۱٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

www.dawateislami.net

ईसार की ता'रीफ़

ऐ आशिक़ाने रसूल और मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को अपने नफ़्स पर किस क़दर क़ाबू था कि शदीद ख़्वाहिश के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **मदीने की मछली** न खाई, हुसूले सवाब की निय्यत से अपनी दुन्यवी ने'मत राहे ख़ुदा में **ईसार** फ़रमा दी। **ईसार** का मा'ना है : "दूसरों की ख़्वाहिश और ह़ाजत को अपनी ख़्वाहिश व ह़ाजत पर तरजीह़ देना।"

अंगूरों का ईसार

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के **ईसार** की एक और ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बीमार हो गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **ख़्वाहिश** हुई कि जब **अंगूर** का पहली बार फल आए तो उसे खाएं, चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक दिरहम के **अंगूर** मंगवा लिये, इतने में एक साइल ने उन अंगूरों का सुवाल किया, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : **येह अंगूर इस साइल को दे दो,** चुनान्चे दे दिये गए। बीबी साह़िबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दोबारा एक दिरहम के **अंगूर** मंगवाए। उसी साइल ने फिर आ कर सुवाल किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह **अंगूर** भी इस को दे दो, ह़त्ता कि बीबी साह़िबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तीसरी मरतबा **अंगूर** मंगवाए। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۲۵۹ حدیث۳۴۸۱) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन**

पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बचपन शरीफ़ की अदाए मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को जिस दर से **ईसार** का जज़्बा मिला, उस के भी क्या कहने ! या'नी मेरे प्यारे प्यारे **आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह शान थी कि आ़लमे शीर ख़्वारी (या'नी दूध पीने की उ़म्र) में भी अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाते थे जैसा कि रिवायात में आता है कि सय्यि-दतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अपनी औलाद भी चूंकि दूध में शरीक होती थी लिहाज़ा सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाह कितनी ही भूक होती सिर्फ़ एक ही त़रफ़ से दूध नोशे जान फ़रमाते (या'नी पीते) थे । (اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَّة ج۱ص۷۹مُلَخَّصا) इसी ईमान अफ़्रोज़ **अदाए मुस्त़फ़ा** की त़रफ़ इशारा करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, आ़शिक़े माहे रिसालत, **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपने ना'तिया दीवान, **ह़दाइक़े बख़्शिश** शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

भाइयों के लिये तर्के पिस्तां करें
दूध पीतों की निस्फ़त[1] पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : अ़द्ल, इन्साफ़ ।

हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अपने अन्दर किस क़दर **ईसार** का जज़्बा रखते थे ! अपनी पसन्दीदा चीज़ राहे खु़दा में दे देना वाक़ेई बहुत बड़े अज्रो सवाब का काम है । कु़रआने करीम के चौथे पारे की इब्तिदा में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का मुबारक इर्शाद है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ (پ ٤، اٰل عمران آیت ٩٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खु़दा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।

www.dawateislami.net

आयत की तशरीह़

ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबा-रका के तह़त **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی लिखते हैं : (ह़ज़रते सय्यिदुना) ह़सन (बसरी) عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का क़ौल है : जो माल मुसल्मान को मह़बूब (या'नी प्यारा) हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक **खजूर** ही हो । (تفسیرِ خازن ج١ ص٢٧٢)

शकर की बोरियां

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शकर की बोरियां ख़रीद कर स-दक़ा करते थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की गई : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं स-दक़ा कर

देते ? फ़रमाया : **शकर** मुझे मह़बूब व मरग़ूब (या'नी प्यारी और पसन्दीदा) है और मैं चाहता हूं कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी **प्यारी चीज़** ख़र्च करूं ।

(تفسیرِنسفی ص۱۷۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पसन्दीदा बाग़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में तमाम अन्सार से ज़ियादा बाग़ों वाले थे । इन्हें अपने माल में "**बैरुहा**" (नामी बाग़) सब से ज़ियादा प्यारा था जो कि **मस्जिदुन्-नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के सामने था । सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ ले जाते थे और वहां का बेहतरीन पानी पीते थे । जब चौथे पारे की इब्तिदाई आयते करीमा : لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो) नाज़िल हुई तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में खड़े हो कर अ़र्ज़ की : मुझे अपने अम्वाल में "**बैरुहा**" सब से प्यारा है मैं इस को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा करता हूं । मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास इस का सवाब और इस का ज़ख़ीरा चाहता हूं । **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इसे वहां ख़र्च फ़रमाएं जहां रब तआला आप की राय क़ाइम फ़रमाए । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "بَخٍ ذٰلِكَ مَالٌ رَّابِحٌ" "या'नी

"ख़ूब ! येह बड़ा नफ़्अ़ का माल है," जो तुम ने कहा मैं ने सुन लिया, मेरी राय येह है कि तुम इसे अपने अहले क़राबत में वक़्फ़ कर दो । सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बोले : **या रसूलल्लाह !** मैं येही करता हूं । फिर सय्यिदुना **अबू त़ल्ह़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वोह बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों और चचा के बेटों में तक़्सीम कर दिया । (صَحیح بُخاری ج۱ ص۴۹۳ حدیث ۱٤٦۱) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "मिरआतुल मनाजीह़" जिल्द 3 सफ़ह़ा 125 पर फ़रमाते हैं : "**बैरुह़ा**" नाम के, मुह़द्दिसीन ने आठ मा'ना किये हैं : जिन में एक येह कि "**ह़ाअ**" एक आदमी का नाम था जिस ने येह कूंआं खुदवाया था, चूंकि येह कूंआं उस बाग़ में था, लिहाज़ा बाग़ का नाम भी येही हुवा, वोह कूंआं अब तक मौजूद है फ़क़ीर ने उस का पानी पिया है । मज़ीद आगे चल कर फ़रमाते हैं : हुज़ूर को भी यहां का पानी बहुत मह़बूब था, इसी लिये हुज्जाजे बा ख़बर ज़रूर इस का पानी ब-र-कत के लिये पीते हैं । (आजकल "**बैरुह़ा**" की ज़ियारत नहीं हो सकती, न ही उस का पानी पिया जा सकता है क्यूं कि वोह **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तौसीअ़ में शामिल हो चुका है । हां जानकार (या'नी मा'लूमात रखने वाले लोग) **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में उस मख़्सूस मक़ाम की ज़ियारत करवा सकते हैं जहां "**बैरुह़ा**" था) मुफ़्ती साहिब सफ़ह़ा 126 पर ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "ख़ूब ! येह तो

www.dawateislami.net

बड़ा नफ़्अ़ का माल है'' के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ऐ अबू त़ल्ह़ा ! तुम्हें इस बाग़ के वक़्फ़ करने में बहुत नफ़्अ़ होगा, मा'लूम होता है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आ'माल की क़बूलिय्यत की भी ख़बर है और येह भी कि किस का कौन सा अ़मल किस द-रजे का क़बूल है (और) येह बाग़ क्यूं क़बूल न होता ! बाग़ भी अच्छा था, वक़्फ़ करने वाले भी अच्छे या'नी सह़ाबी और जिन के तुफ़ैल वक़्फ़ किया गया वोह अच्छों के शहन्शाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ।

सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उ़म्दा घोड़ा

''**तफ़्सीरे ख़ाज़िन**'' में चौथे पारे की पहली आयत

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ (پ ٤،ال عمران،آیت ٩٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो ।

के तह़्त है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस आयते मुबा-रका के नुज़ूल पर अपना उ़म्दा व नफ़ीस **घोड़ा** दरबारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में लाए अ़र्ज़ की : येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ''स-दक़ा'' है । **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह **घोड़ा** उन ही के फ़रज़न्द सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़त़ा फ़रमा

दिया । हज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी निय्यत **स-दक़े** की थी । फ़रमाया : "**रब** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारा **स-दक़ा** क़बूल फ़रमा लिया ।" (تفسیر خازن ج ۱ ص ۲۷۲) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

फ़ारूक़े आ'ज़म को कनीज़ पसन्द आई तो आज़ाद कर दी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लिखा कि मेरे लिये एक कनीज़ ख़रीद कर भिजवा दीजिये । उन्हों ने भेज दी, वोह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बहुत पसन्द आई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते करीमा ... لَنْ تَنَالُوا (आख़िर तक) पढ़ कर उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में आज़ाद फ़रमा दिया । (تفسیر طبری ج ۳ ص ۳٤٦ رقم ۷۳۹۰) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! हमारे अन्दर भी ऐसा जज़्बए ईसार व क़ुरबानी पैदा हो जाए कि हम भी अपनी **प्यारी चीज़ें** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लुटा दिया करें, अफ़्सोस ! हम तो अच्छी और उ़म्दा अश्या को जान की त़रह़ संभाल कर रखते हैं और अगर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देना या किसी को तोह़फ़ा पेश करना हो तो उ़मूमन रद्दी क़िस्म की चीज़ें ही देते हैं और वोह भी वोही जो कि हमारे लिये कार आमद नहीं होतीं ! किस क़दर मह़रूमी की बात है कि जिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें ने'मतें अ़त़ा

फ़रमाई हैं उसी की अ़त़ा कर्दा ने'मतें उसी की राह में देने के लिये हम तय्यार नहीं होते। हमारी चीज़ें ख़्वाह चोरी हो जाएं, सड़ जाएं, इधर उधर गुम हो जाएं परवाह नहीं, आह! हमारा दिल नहीं होता तो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने को नहीं होता।

दे जज़्बा तू ऐसा तेरे नाम पर दूं
पसन्दीदा चीज़ें लुटा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का उ़म्दा ऊंट

अपनी प्यारी चीज़ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने का एक और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये। **मश्हूर** सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र ग़िफ़ारी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की एक क़रीबी बस्ती में रहा करते थे। गुज़र बसर के लिये आप के पास चन्द ऊंट थे और एक कमज़ोर सा चरवाहा। एक बार ख़ानदाने बनू सुलैम के एक साह़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि हुज़ूर! मुझे अपनी सोह़बत में रहने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाइये, फ़ैज़ भी ह़ासिल करूंगा और आप जनाब के चरवाहे का साथ भी दे दिया करूंगा। **सय्यिदुना अबू ज़र** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने साथ रहने की शर्त़ (गोया "म-दनी फ़ीस") येह इर्शाद फ़रमाई कि आप को मेरी इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) करनी होगी। अ़र्ज़ की : किस बात में ? फ़रमाया : **"जब मैं अपने माल में से कोई चीज़ राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में देने का कहूं तो सब**

से बेहतरीन शै देनी होगी ।'' उन्हों ने मन्ज़ूर कर लिया और सोहबते बा ब-र-कत से फ़ैज़याब होने लगे । एक दिन किसी ने सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! यहां नदी के कनारे कुछ ग़ु-रबा आबाद हैं हो सके तो उन की कोई इमदाद फ़रमा दीजिये । सुलैमी साहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे हुक्म दिया : ''एक ऊंट ले आइये ।'' मैं गया और सब से **ज़ुम्दा ऊंट** ले जाने का इरादा किया मगर मेरे ज़ेहन में आया कि येह **ऊंट** सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सुवारी के लिये कार आमद भी है और मुती़अ़ (या'नी फ़रमां बरदार) भी । मक़्सूद तो सिर्फ़ गोश्त तक़्सीम करना है लिहाज़ा इस के बदले इस के बा'द के द-रजे की बेहतरीन **ऊंटनी** पेश कर दी । फ़रमाया : ''आप ने ख़ियानत की ।'' मैं समझ गया और उसी **ऊंट** को हाज़िर कर दिया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुक्म फ़रमाया कि नदी के कनारे जितने घर आबाद हैं सब की गिनती फ़रमा लीजिये और मेरा घर भी उस में शामिल कर लीजिये, फिर ऊंट को नहर कर के सब के घरों में बराबर बराबर गोश्त पहुंचा दीजिये, मेरे घर में भी दूसरों के मुक़ाबले में कोई बोटी ज़ाइद न जाने पाए इस का ख़याल रखिये । हुक्म की ता'मील कर दी गई । बा'दे फ़राग़त मुझे त़लब कर के फ़रमाया : क्या आप वा'दा भूल गए थे ? मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे वा'दा याद था और अव्वल लिया भी उसी ऊंट को था मगर मुझे ख़याल हुवा कि येह ऊंट आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सुवारी का है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये बहुत कार आमद भी, महूज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़रूरत के पेशे नज़र उस को छोड़ा था । फ़रमाया : वाक़ेई सिर्फ़ मेरी ज़रूरत के पेशे नज़र छोड़ दिया था ?

अ़र्ज़ की : जी हां । फ़रमाया : अपनी ज़रूरत का दिन न बता दूं ? सुन लो ! मेरी ज़रूरत का दिन तो वोह दिन है जिस दिन मैं **क़ब्र** के गढ़े में तन्हा डाल दिया जाऊंगा, बाक़ी रहा माल, तो इस के तीन हिस्सेदार हैं : (1) ''तक़्दीर'' जो माल ले जाने में किसी का लिहाज़ नहीं करती (2) ''वारिस'' जो तेरे मरने का मुन्तज़िर रहता है कि कब तू मरे और वोह तेरे माल पर क़ब्ज़ा कर ले (3) तीसरा हिस्सेदार तू ख़ुद है (जब तक़्दीर और वारिस माल लेने के मुआ़-मले में कोई रिआ़यत नहीं करते तो तू अपना हिस्सा लेने में क्यूं पीछे रहता है ? जितना बन पड़े उ़म्दा से उ़म्दा तरीन माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दे कर अपनी आख़िरत के लिये जम्अ़ कर ले) येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चौथे पारे की इब्तिदाई आयते करीमा तिलावत की :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ (پ ٤،ال عمران آیت ٩٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो ।

और फ़रमाया कि इसी लिये जो माल मुझे सब से ज़ियादा पसन्द होता है उस को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा करता हूं । (تفسیر دُرِّ مَنثور ج٢ ص٢٦١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश ! हमें भी सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जज़्बए **ईसार** के समुन्दर का कोई आधा क़त़रा ही नसीब हो जाता ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! अपनी पसन्द की चीज़ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करना तो गोया हमारी डिक्शनरी में है ही नहीं ! बस हर दम माले

मुफ़्त की त़लब में ही दिल फंसा रहता है, बिल ख़ुसूस जो ज़ियादा सवाब का काम हो उस में ख़र्च करने के लिये नफ़्स क़त़्अन इजाज़त नहीं देता म-सलन क़ुरआने करीम या दीनी किताब वग़ैरा ख़रीद कर पढ़ना अगर्चे ज़ियादा सवाब का बाइ़स है मगर जी चाहता है कि चन्दे से या तोह़फ़े में मिल जाए तो अच्छा, सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में पल्ले से ख़र्च करने का बे अन्दाज़ा सवाब है मगर हमारे नफ़्से सितम गर का बुरा हो येह बद बख़्त येही ज़ेह्न बनाता रहता है कि कोई दूसरा ख़र्च उठाए तो ही सफ़र करना, बल्कि जो दिन क़ाफ़िले में सफ़र के अन्दर गुज़रें उन की उजरत भी मिलनी चाहिये । हाए ! हाए ! इस ह़िर्सो आज़ भरे अन्दाज़ के साथ रब्बे बे नियाज़ جَلَّ جَلَالُهٗ को किस त़रह़ राज़ी किया जा सकेगा ।

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर

नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

माल से तीन त़रह़ के फ़वाइद मिलते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुनो ! सुनो ! ऐ माल के मतवालो सुनो ! **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बन्दा कहता है : मेरा माल है ! मेरा माल है ! और इसे तो इस के माल से तीन ही त़रह़ का फ़ाएदा है : (1) जो खा कर फ़ना कर दिया या (2) पहन कर पुराना कर दिया या (3) अ़त़ा कर के आख़िरत के लिये जम्अ़ किया और इस के सिवा जाने वाला है कि औरों के लिये छोड़ जाएगा ।

(صَحِيح مُسلِم ص ١٥٨٢ حديث ٢٩٥٩)

वारिस का माल

महबूबे रब्बे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम में से कौन शख़्स ऐसा है कि जिस को अपने वारिस का माल अपने माल से अच्छा लगे ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसा कौन हो सकता है जिस को अपने माल से दूसरे का माल अ़ज़ीज़ हो ? इस पर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपना माल वोही है जो (राहे ख़ुदा में ख़र्च कर के) आगे भेज दिया जाए और जो बाक़ी छोड़ दिया जाए वोह **वारिस का माल** है । (بخاری ج ٤ ص ٢٣٠ حدیث ٦٤٤٢)

म-रज़ुल मौत में भी ईसार

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! कोई अपनी ज़िन्दगी ही में माल से मस्जिद वग़ैरा बनवा कर सवाबे जारिया की तरकीब बनाने में काम्याब हो जाए ! रही औलाद, तो इन से अगर कोई मालदार आदमी येह उम्मीद रखता हो कि येह सवाबे जारिया की तरकीब करेंगे तो उस की शायद बहुत बड़ी भूल है, आजकल तर्के की तक़्सीम में जो औलाद ख़ूं रेज़ी तक से बाज़ नहीं रहती वोह ख़ाक अपने मर्हूम बाप को राह़त पहुंचाने का सामान करेगी ! **ईसार** का ज़ेह्न बनाइये येही आख़िरत में काम आएगा । ज़रा देखिये तो सही ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين सवाब की हिर्स में **ईसार** के मुआ़-मले में किस क़दर आगे बढ़े हुए थे चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي **"एह़याउल उ़लूम"** में नक़्ल करते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه म-रज़ुल मौत में मुब्तला थे, किसी ने आ कर सुवाल किया : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी क़मीस उतार कर उसे दे दी, अपने लिये उधार कपड़ा ह़ासिल किया और उसी में इन्तिक़ाल फ़रमाया । (اِحْیاءُ الْعُلُوم ج۳ ص ۳۱۹) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सख़ावत में ह़ैरत अंगेज़ जल्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ नेकियों के कितने ह़रीस होते थे कि म-रज़ुल मौत में भी सवाब कमाने का मौक़अ़ हाथ से न जाने दिया येह ह़ज़रात नेकी कमाने में बसा अवक़ात तो इस क़दर जल्दी फ़रमाते कि ह़ैरत होती है चुनान्चे **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 10 सफ़ह़ा 84 पर फ़रमाते हैं : सय्यिदुना व इब्ने सय्यिदुना, इमाम इब्नुल इमाम, करीम इब्नुल किराम ह़ज़रते **इमाम मुह़म्मद बाक़िर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक क़बाए नफ़ीस (या'नी उ़म्दा अचकन। शेरवानी) बनवाई। त़हारत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए, वहां ख़याल आया कि इसे राहे ख़ुदा में दीजिये फ़ौरन ख़ादिम को आवाज़ दी, क़रीबे दीवार ह़ाज़िर हुवा । हुज़ूर ने क़बाए मुअ़ल्ला (अचकन मुबारक) उतार कर दी कि फ़ुलां मोह़ताज को दे आ। जब बाहर रौनक़ अफ़रोज़ हुए, ख़ादिम ने अ़र्ज़ की : इस द-रजा ता'जील (या'नी इस क़दर जल्दी) की वजह क्या थी ? फ़रमाया : क्या मा'लूम था

www.dawateislami.net

कि बाहर आते आते **निय्यत** में फ़र्क़ आ जाता। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

नेकी में जल्दी करनी चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ المُبِين नेकी में किस क़दर जल्दी करते थे मबादा (या'नी ऐसा न हो कि) क़ल्ब मुन्क़लिब हो जाए (या'नी दिल का इरादा बदल जाए) और नेकी से मह़रूमी का सामना हो। लिहाज़ा जब भी नेकी का ज़ेहन बने फ़ौरन कर लेनी चाहिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "नेक आ'माल में जल्दी करो।" (سُنَنِ ابن ماجه ج ٢ ص ٥ حديث ١٠٨١)

www.dawateislami.net

रुक्आ़ पढ़े बिग़ैर दर-ख़्वास्त मन्ज़ूर कर ली

अफ़्सोस ! अक्सर लोग अव्वल तो राहे ख़ुदा में देते नहीं, देते हैं तो बहुत सोच समझ कर, ख़ूब तह़क़ीक़ कर के, धक्के खिला कर, रुला रुला कर, बे दिली के साथ और वोह भी **ज़कात** जो कि माल का मैल है और वोह भी बहुत ही थोड़ी मिक्दार में बहुत बड़ा एह़सान रख कर देते हैं ! जब कि देखा जाए तो ज़कात देने वाले को सोचना चाहिये कि मोह़सिन मैं नहीं, एह़सान तो उस का है जो मेरी ज़कात या'नी मेरे माल का मैल उठाता है। काश ! ऐसा हो जाए कि ग़रीबों को तलाश कर के, उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर निहायत एह़तिराम के साथ ज़कात पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की जाए। ऐसों की तरग़ीब के लिये **चार**[4] **ह़िकायात** पेशे ख़िदमत हैं :

(1) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 404 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''ज़ियाए स-दक़ात''** सफ़ह़ा 209 ता 210 पर है : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में एक दर-ख़्वास्त पेश की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़ौरन फ़रमाया : ''तुम्हारी ह़ाजत पूरी कर दी गई'' अ़र्ज़ की गई : ऐ नवासए रसूल ! आप उस का रुक़्आ़ पढ़ते और फिर उस के मुत़ाबिक़ जवाब देते । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : वोह (उतनी देर तक) मेरे सामने ज़िल्लत के साथ खड़ा रहता तो फिर उस के बारे में **अल्लाह** तआ़ला मुझ से पूछता । (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۳۰٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

दिल दौलत से नहीं भलाई से ख़रीदा जा सकता है

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! राकिबे दौशे मुस्त़फ़ा, **सय्यिदुल अस्ख़िया** सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़शिय्यते इलाही को अपने माल पर मुक़द्दम रखा और इसी में फ़लाह़ व काम्याबी है कि माल की **मह़ब्बत अल्लाह** की **मह़ब्बत** पर ग़ालिब नहीं आनी चाहिये । बेशक माल से बहुत कुछ ख़रीदा जा सकता है मगर दिल नहीं ख़रीद सकते ! चुनान्चे **(2)** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे उस शख़्स पर **तअ़ज्जुब** होता है जो माल ख़र्च कर के ग़ुलाम तो ख़रीदता है लेकिन नेकी (व भलाई) के ज़रीए आज़ाद लोगों (के दिलों) को नहीं ख़रीदता । (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۳۰٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

www.dawateislami.net

सख़ी वोह नहीं जो सिर्फ़ मांगने पर दे

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो शख़्स मांगने वालों को (मांगने पर) देता है वोह **सख़ी** नहीं, **सख़ी** तो वोह है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करने वालों के सिल्सिले में **अल्लाह** तआ़ला के ह़ुक़ूक़ को ख़ुद बख़ुद पूरा करता है और शुक्रिया का लालच भी नहीं रखता क्यूं कि वोह मुकम्मल सवाब के ह़ुसूल का यक़ीन रखता है । (ऐज़न) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

दोस्त की ख़बर गीरी न करने पर अफ़्सोस

(4) एक शख़्स ने अपने दोस्त के घर का दरवाज़ा खट-खटाया । उस ने पूछा : कैसे आना हुवा ? कहा : मुझ पर चार सो दिरहम क़र्ज़ हैं । साह़िबे ख़ाना ने चार सो दिरहम उस के ह़वाले कर दिये और रोता हुवा वापस आया, बीवी ने कहा : अगर आप को इन दिरहमों का देना शाक़ (या'नी दुश्वार व ना गवार) था तो न देते । उस ने कहा : मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मुझे उस का ह़ाल उस के बताए बिग़ैर मा'लूम न हो सका ह़त्ता कि वोह (बेचारा) मेरा दरवाज़ा खट-खटाने पर मजबूर हुवा ।

(اِحیاءُ العُلُوم ج۳ص۳۱۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, कमाल येह नहीं कि ज़रूरत मन्द दोस्त मांगने आए और हम उस को दे दें, कमाल तो येह है उस की माली कमज़ोरियों पर हमारी नज़र हो और इस से पहले कि वोह शरमाता लजाता हम से अपना ह़ाल कहे हम उस की ख़ुद जा कर इमदाद कर दें ।

हमें अपने फ़ज़्लो करम से तू कर दे
सख़ावत की ने'मत अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निराली मेहमान नवाज़ी

''ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान'' में है : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में एक बार एक भूका शख़्स हाज़िर हुवा, **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُنَّ के घरों में मा'लूम करवाया कि कोई खाने की चीज़ मिल जाए मगर किसी के यहां कोई खाने की चीज़ न थी। **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : **''जो शख़्स इस को मेहमान बनाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रहमत फ़रमाए।''** हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खड़े हो गए और मेहमान को अपने दौलत ख़ाने पर ले गए, घर जा कर अपने बच्चों की अम्मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त किया : घर में कुछ खाना है ? उन्हों ने कहा : सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा रखा है। हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : बच्चों को बहला फुस्ला कर सुला दो। और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने के बहाने उठो और चराग़ बुझा दो, ताकि मेहमान अच्छी त़रह़ खा ले। येह तरकीब इस लिये की, कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं खा रहे वरना इस्रार करेगा और खाना थोड़ा है, इस लिये मेहमान भूका रह जाएगा। इस त़रह़ हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेहमान को खाना खिला दिया

www.dawateislami.net

और ख़ुद अहले ख़ाना ने भूके रह कर रात गुज़ार दी । जब सुब्ह़ हुई और बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देख कर फ़रमाया : **रात फ़ुलां फ़ुलां के घर में अ़जीब मुआ़-मला पेश आया । अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उन लोगों से बहुत राज़ी है और सूरए ह़श्र की येह आयत नाज़िल हुई :**

وَ یُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَ مَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۹﴾ (پ۲۸ الحشر، آیت۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 984, ब तस़र्रुफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

आक़ा दूसरे दिन के लिये खाना न बचाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी ह़िकायत पर ग़ौर करने से इ़ब्रत के बहुत सारे **म-दनी फूल** मुयस्सर आते हैं । म-सलन **शहनशाहे दो आ़लम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सा-दगी के आ़लम में ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे कि किसी भी उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर से रात को खाना बर आमद न हुवा । हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तवक्कुल का आ़लम येह था कि आप दूसरे दिन के लिये खाना बचा कर नहीं रखते थे । उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "हम ने कभी भी मुसल्सल तीन दिन तक पेट भर कर खाना नहीं खाया ह़ालां कि खा सकते थे मगर (खाने के बजाए) **ईसार** कर दिया करते थे।" (اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج٤ص٩٢ حدیث٨٦)

बच्चे के रोज़े का अहम तरीन मस्अला

बयान कर्दा म-दनी ह़िकायत में **बच्चों** के लिये रखा हुवा थोड़ा सा खाना बच्चों के बजाए मेहमान को खिला देने के तअ़ल्लुक़ से **मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इस मुआ-मले को इस पर मह़मूल किया (या'नी इस से मुराद येह) है कि बच्चे भूके नहीं थे बल्कि बिग़ैर भूक के मांग रहे थे जैसा कि बच्चों की आ़दत होती है, वरना अगर वोह भूके होते तो मेहमान से पहले भूके बच्चों को खिलाना **वाजिब** था और वोह वाजिब को कैसे तर्क कर सकते थे । (क्यूं कि वाजिब का तारिक गुनहगार होता है) ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और उन की ज़ौजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ता'रीफ़ फ़रमाई है । (اشعۃ اللّمعات ج٤ص٧٤٠) इस शर्हे ह़दीस से मा'लूम हुवा कि बच्चों को भूक लगने की सूरत में उन्हें खाना खिलाना मां बाप पर **वाजिब** हो जाता है । यहां एक मस्अला क़ाबिले तवज्जोह है और वोह येह कि छोटे बच्चे को **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ा रखवाना अगर्चे जाइज़ है मगर वोह भूक के सबब खाना मांगे तो मां बाप के लिये उन को खिलाना **वाजिब** हो जाएगा चाहे वोह उस की ज़िन्दगी का पहला रोज़ा हो अगर बिला इजाज़ते शर-ई नहीं

www.dawateislami.net

खिलाएंगे तो गुनहगार और जहन्नम के हक़दार हो जाएंगे ।

हो मेहमान नवाज़ी का जज़्बा इनायत

हो पासे शरीअ़त अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उहुद पहाड़ जितना सोना हो तब भी.....

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे आ़लम मदार, सख़ियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सख़ावत आसार है : **"अगर मेरे पास उहुद (पहाड़) के बराबर सोना हो तो भी मुझे येही पसन्द आता है कि तीन रातें न गुज़रने पाएं कि उन में से मेरे पास कुछ रह जाए, हां अगर मुझ पर दैन** (या'नी क़र्ज़) **हो तो उस के लिये कुछ रख लूंगा ।"** (صحیح بخاری ج٤ص٤٨٣ حدیث٧٢٢٨)

www.dawateislami.net

सुन्नतों के डंके बजाने वालो !

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **महब्बत** का दम भरने वालो और सुन्नतों के डंके बजाने वालो ! देखा आप ने ? हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **उहुद पहाड़** के बराबर भी सोना हो तो उस को अपने पास रखने के लिये तय्यार नहीं, और एक हम हैं कि इ़श्क़े रसूल के दा'वे के बा वुजूद माल जम्अ़ करने की फ़िक्र से ही ख़लासी (या'नी छुटकारा) नहीं पाते । अफ़्सोस ! ह़लाल और ह़राम की तमीज़ तक उठती जा रही है । हमारी इस्लामी बहनें भी ख़ूब **सोना**

जम्अ़ करने की शौक़ीन होती हैं, सारा सोना और माल लुटा देना तो एक त़रफ़ रहा अपने सोने की **ज़कात** तक अदा करने के लिये बा'ज़ ख़वातीन तय्यार नहीं होतीं ! और नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर कहती सुनाई देती हैं कि हम कमाती नहीं हैं, ज़कात तो वोह अदा करें जो कमाते हैं ! ह़ालां कि ऐसा नहीं, अगर सोने के ज़ेवर वग़ैरा किसी के पास हों और ज़कात के शराइत़ पाए जाएं तो **ज़कात** फ़र्ज़ हो जाएगी । सोने (GOLD) से प्यार करने में ह़द से बढ़ने वालियां एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक सुनें और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें और आज तक गुज़श्ता ज़िन्दगी की जितनी **ज़कात** ज़िम्मे है ह़िसाब लगा कर फ़ौरी त़ौर पर सारी की सारी अदा कर दें और बिला इजाज़ते शर-ई होने वाली ताख़ीर की तौबा भी करें ।

www.dawateislami.net

आग के कंगन

नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में दो[2] औ़रतें ह़ाज़िर हुईं, उन के हाथों में **सोने के कंगन** थे । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया या'नी पूछा : तुम इन की **ज़कात** देती हो ? वोह बोलीं : नहीं । फ़रमाया : क्या तुम पसन्द करती हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें **आग के कंगन** पहनाए ? वोह बोलीं : नहीं । तो फ़रमाया : इन की **ज़कात** दिया करो । (ترمذی ج۲ص۱۳۲ حدیث ۶۳۷) ज़कात की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 149 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''फ़ैज़ाने ज़कात'' का मुत़ा-लआ़ निहायत मुफ़ीद है ।

बीबी फ़ातिमा का ईसार

राकिबे दौशे मुस्तफ़ा, **सय्यिदुल अस्खिया,** इमामे हुमाम सय्यिदुना **इमाम ह़सन मुज्तबा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक रोज़ एक वक़्त के **फ़ाक़े** के बा'द हमारे यहां खाने की तरकीब बनी, मेरे बाबाजान मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم और मेरे छोटे भाई ह़ज़रते **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खाने से फ़ारिग़ हो चुके थे मगर **अम्मीजान** सय्यि-दतुन्निसा फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अभी नहीं खाया था, उन्हों ने जूंही रोटी पर हाथ बढ़ाया कि दरवाज़े पर एक साइल ने सदा दी : **"ऐ बिन्ते रसूलुल्लाह !** मैं दो वक़्त का भूका हूं मेरा पेट भर दीजिये ।" **अम्मीजान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़ौरन खाने से हाथ रोक लिया और मुझे हुक्म दिया कि जाओ ! येह खाना साइल को पेश कर दो, मुझे तो **एक वक़्त का फ़ाक़ा है** और इस ने **दो[2] वक़्त** से नहीं खाया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खिलाने पिलाने का अ़ज़ीमुश्शान सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदह ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़ाक़े के बा वुजूद अपना खाना **ईसार** फ़रमा

दिया ! अफ़्सोस ! अहले बैते नुबुव्वत से महब्बत का दम भरने के बा वुजूद हम अपनी ज़रूरत का कुजा बचा खुचा खाना भी किसी को पेश करने के बजाए आइन्दा के लिये फ्रीज में रख छोड़ते हैं । यक़ीन मानिये ! भूकों को खाना खिलाना और प्यासों को पानी पिलाना बड़े सवाब का काम है। इस ज़िम्न में **दो फ़रामैने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ﴿1﴾ जो मुसल्मान किसी मुसल्मान को भूक में खाना खिलाए, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी मुसल्मान को प्यास में पानी पिलाए, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बरोज़े क़ियामत मोहर वाली पाक व साफ़ शराब पिलाएगा और जो मुसल्मान किसी बे लिबास मुसल्मान को कपड़ा पहनाए, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत के **सब्ज़ कपड़े** पहनाएगा । (ترمذی ج٤ ص٢٠٤ حدیث ٢٤٥٧) ﴿2﴾ जो किसी मुसल्मान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में उस दरवाज़े से दाख़िल फ़रमाएगा जिस में से उस जैसे लोग ही दाख़िल होंगे ।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج ٢٠ ص ٨٥ حدیث ١٦٢)

खिलाने पिलाने की तौफ़ीक़ दे दे
पए शाहे कर्बो बला या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अनोखा दस्तर ख़्वान

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हसन अन्ताकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الباقی के

पास एक बार बहुत से मेहमान तशरीफ़ ले आए । रात जब खाने का वक़्त आया तो **रोटियां** कम थीं, चुनान्चे रोटियों के टुकड़े कर के दस्तर ख़्वान पर डाल दिये गए और वहां से चराग़ उठा दिया गया, सब के सब मेहमान अंधेरे ही में **दस्तर ख़्वान** पर बैठ गए, जब कुछ देर बा'द येह सोच कर कि सब खा चुके होंगे चराग़ लाया गया तो तमाम टुकड़े जूं के तूं मौजूद थे । **ईसार** के जज़्बे के तह़त एक लुक़्मा भी किसी ने न खाया था क्यूं कि हर एक की येही म-दनी सोच थी कि मैं न खाऊं ताकि साथ वाले इस्लामी भाई का पेट भर जाए । (اِتحافُ السّادۃ ج۹ص ۷۸۳) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

अपनी ज़रूरत की चीज़ दे देने की फ़ज़ीलत

www.dawateislami.net

अल्लाह ! अल्लाह ! हमारे अस्लाफ़ का **जज़्बए ईसार** किस क़दर ह़ैरत नाक था और आह ! आज हमारा जज़्बए ह़िर्सो त़मअ़ कि जब किसी दा'वत में हों और खाना शुरूअ़ किया जाए तो "खाऊं खाऊं" करते खाने पर ऐसे टूट पड़ें कि "खाना और चबाना" भूल कर "निगलना और पेट में लुढ़काना" शुरूअ़ कर दें कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा दूसरा इस्लामी भाई तो खाने में काम्याब हो जाए और हम रह जाएं ! हमारी ह़िर्स की कैफ़िय्यत कुछ ऐसी होती है कि हम से बन पड़े तो शायद दूसरे के मुंह से निवाला भी छीन कर निगल जाएं ! काश ! हम भी "ईसार" करना सीखें । **सुल्ताने दो जहां** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **"जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर** (दूसरे को) **तरजीह़ दे, तो अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है ।''** (اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج۹ ص ۷۷۹)

हमें भूका रहने का औरों की ख़ातिर
अ़ता कर दे जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईसार का सवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े

काश ! हमें भी ईसार का जज़्बा नसीब हो, अगर ख़र्च करने को जी नहीं चाहता तो बिग़ैर ख़र्च के भी ईसार के कई मवाक़ेअ़ मिल सकते हैं । म-सलन कहीं दा'वत पर पहुंचे, सब के लिये खाना लगाया गया तो हम उ़म्दा बोटियां वग़ैरा इस निय्यत से न उठाएं कि हमारा दूसरा भाई उस को खा ले । गरमी है कमरे के अन्दर या सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में मस्जिद के अन्दर कई इस्लामी भाई सोना चाहते हैं, ख़ुद पंखे के नीचे क़ब्ज़ा जमाने के बजाए दूसरे इस्लामी भाई को मौक़अ़ दे कर **ईसार** का सवाब कमा सकते हैं । इसी त़रह़ बस या रेलगाड़ी के अन्दर भीड़ की सूरत में दूसरे इस्लामी भाई को **ब इस्रार** अपनी निशस्त पर बिठा कर और ख़ुद खड़े रह कर, कार में सफ़र का मौक़अ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद दूसरे इस्लामी भाई के लिये क़ुरबानी दे कर उसे कार में बिठा कर और ख़ुद पैदल या बस वग़ैरा में सफ़र कर के, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ वग़ैरा में आराम देह जगह मिल जाए तो दूसरे इस्लामी भाई पर जगह कुशादा कर के या उसे वोह जगह पेश कर के, खाना कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो ख़ुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी त़रह़ के बे शुमार मवाक़ेअ़ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तक्लीफ़ दे कर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

मुफ़्त में **ईसार** का सवाब कमाया जा सकता है।

ईसार का सवाब बे ह़िसाब जन्नत

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی **कीमियाए सआ़दत** में नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : **ऐ मूसा** (عَلَیْهِ السَّلَام) ! कोई शख़्स ऐसा नहीं कि वोह उ़म्र भर में चाहे एक ही मरतबा **ईसार** करे और मैं बरोज़े क़ियामत उस से ह़िसाब त़लब करते हुए ह़या न फ़रमाऊं ! उस का मक़ाम **जन्नत** है, वोह जहां भी चाहे रहे। (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۳۱۸)

जब जन्नत की दुआ़ देता हूं तो माली ईसार से क्यूं रुकूं !

ह़ज़रते **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया कि **सख़ावत** किसे कहते हैं ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : भाइयों से भलाई का सुलूक करना और माल अ़त़ा करना **सख़ावत** है। मज़ीद फ़रमाया : मेरे वालिदे माजिद علیہ رَحْمَةُ اللّٰه الواحِد को विरासत में पचास हज़ार दिरहम मिले तो उन्हों ने थेलियां भर भर कर अपने भाइयों को तक़्सीम कर दिये और फ़रमाया कि मैं जब नमाज़ में **अल्लाह** तआ़ला से अपने भाइयों के लिये (सब से अ़ज़ीम दौलत) **जन्नत** का सुवाल किया करता था तो अब (दुन्याए फ़ानी के ह़क़ीर) माल में इन से बुख़्ल क्यूं करूं ? (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص ۳۰۵) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

सख़ावत की ख़स्लत इनायत हो या रब !
दे जज़्बा भी ईसार का या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बकरी की सिरी

किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बतौरे हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर **बकरी की सिरी** भेजी तो उन्हों ने येह फ़रमा कर कि फुलां मेरा इस्लामी भाई इस **सिरी** का मुझ से ज़ियादा ज़रूरत मन्द है, वोह **सिरी** उस के घर भेज दी तो उन्हों ने कहा कि फुलां मुझ से भी ज़ियादा ह़ाजत मन्द है और यूं वोह **सिरी** उस सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर भिजवा दी। इस त़रह़ एक ने दूसरे के घर और दूसरे ने तीसरे के घर उस **सिरी** को भेजा यहां तक कि वोह **बकरी की सिरी** सात घरों में घूमती हुई फिर से पहले ही सहाबी के पास पहुंच गई। (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٣ ص ٢٢٩ حديث٣٨٥٢) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

क़ुत़्बे मदीना ने ईसार करने वाले ताजिर की ह़िकायत बयान फ़रमाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? गुरबत व इफ़्लास के बा वुजूद हमारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अन्दर किस क़दर **जज़्बए ईसार** था कि हर एक अपने आप पर दूसरे को तरजीह़ देता था और आह ! आज ह़ालात बिल्कुल बर अ़क्स (या'नी उलट) हैं, अक्सर लोग अपने ही भाई का गला काटने में मसरूफ़ हैं। मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن तुर्कों

के "दौरे ख़िदमत" से **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में सुकूनत पज़ीर हो गए थे । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल शरीफ़ 3 **ज़ुल हिज्जातिल हराम** 1401 **सिने हिजरी मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में हुवा और जन्नतुल बक़ीअ़ में तदफ़ीन अ़मल में आई । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में किसी ने अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** जब आप शुरूअ़ में **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا आए उस वक़्त के मुसल्मान कैसे थे ? फ़रमाया : एक बन्दए मालदार कसीर मिक़्दार में **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के गु-रबा में कपड़े तक़्सीम करना चाहता था लिहाज़ा इस ग़रज़ से एक कपड़े के दुकान दार से उस ने कहा कि मुझे फ़ुलां कपड़े के इतने इतने थान दरकार हैं, दुकान दार ने कहा : "आप का मत्लूबा कपड़ा मेरे पास मौजूद है मगर मेहरबानी फ़रमा कर आप सामने वाली दुकान से ख़रीद लीजिये, क्यूं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी बिकरी अच्छी हो चुकी है मगर उस बेचारे का धन्दा आज कम हुवा है।" फ़रमाया : कि पहले के मुसल्मान ऐसे **मुजस्समे** इख़्लास व ईसार थे और आज के मुसल्मानों को तो आप देख ही रहे हैं कि इन की अक्सरिय्यत किस त़रह़ माल समेटने और एक दूसरे का गला काटने में मश्ग़ूल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

निराले डाकू

कहा जाता है कि पहले के राहे मदीना के **क़त्ताउ़त्तरीक़** या'नी

डाकू भी अ़जीब हुवा करते थे, जब **डाकूओं की जमाअ़त** ह़ाजियों का क़ाफ़िला लूटने लगती तो ह़ाजी उन को सलाम करते, डाकू सलाम का जवाब न देते, अगर वोह सलाम के जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَام कह देते तो उन को लूटने से बाज़ रहते और अगर लूटने के बा'द **सलाम का जवाब** दे देते तो लूटा हुवा माल लौटा देते। क्यूं कि **डाकू** اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم (या'नी तुम पर सलामती हो) और وَعَلَيْكُمُ السَّلَام का मा'ना (और तुम पर भी सलामती हो) ख़ूब समझते थे या'नी उन का ज़ेह्न येह होता था कि जिस को अपनी ज़बान से "सलामती की दुआ़" दे दी अब उस को कैसे लूटें !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां हरगिज़ येह मुराद नहीं कि सलाम का जवाब न देने से डाकूओं के लिये مَعَاذَالله डकैती जाइज़ हो जाती थी, बस हमें इस से येह दर्स ह़ासिल करना है कि हम जिस को सलाम करें उस के बारे में येह तसव्वुर करें कि हम ने उसे अपनी ज़ात से पहुंचने वाले हर क़िस्म के शर से "सलामत" क़रार दे दिया है। अगर ऐसा हो जाए तो वाक़ेई़ हमारा मुआ़-शरा म-दनी मुआ़-शरा बन जाए। मुसल्मान को **सलाम** करते वक़्त की **निय्यत** भी ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला, "101 **म-दनी फूल**" सफ़ह़ा 2 पर है : बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 102 पर लिखे हुए जुज़्इये का ख़ुलासा है : "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को **सलाम** करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना **ह़राम** जानता हूं।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 102)

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़म गुसार सलाम

उस जवाबे सलाम के सदक़े ता क़ियामत हों बे शुमार सलाम

वोह सलामत रहा क़ियामत में

पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपना खाना कुत्ते पर ईसार कर दिया !

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** जिल्द 3 में फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر अपनी किसी ज़मीन को देखने निकले और अस्नाए राह (या'नी रास्ते में) किसी **बाग़** में उतरे, वहां एक **ग़ुलाम** को काम करते देखा, जब उस के पास खाना आया तो कहीं से एक **कुत्ता** भी आ पहुंचा, ग़ुलाम ने एक एक कर के **तीन रोटियां** उस के आगे डालीं, वोह खा गया । सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر ने ग़ुलाम से पूछा : आप को दिन में कितना खाना मिलता है ? अ़र्ज़ की : वोही जो आप ने देखा । पूछा : वोह सब तो आप ने कुत्ते पर **ईसार** कर दिया ! अ़र्ज़ की : इस अ़लाक़े में **कुत्ते** नहीं होते, येह कहीं दूर से आ निकला है, ग़रीब भूका था, मुझे येह गवारा न हुवा कि मैं सैर हो कर खाऊं और येह बेचारा बे ज़बान जानवर भूका रहे । फ़रमाया : आप आज क्या खाएंगे ? अ़र्ज़ की : **फ़ाक़ा** करूंगा । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जाफ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر उस

ग़ुलाम के **ईसार** से बेह़द **मु-तअस्सिर** हुए, चुनान्चे बाग़ के मालिक से वोह बाग़, ग़ुलाम और बक़िय्या सामान वग़ैरा ख़रीद लिया, **ग़ुलाम** को आज़ाद कर के वोह **बाग़** वग़ैरा सब कुछ उसी को बख़्श दिया।

(اِحْیاءُ الْعُلوم ج۳ص۳۱۸)

कुत्ते के ईसार की अ़जीब ह़िकायत

سُبْحٰنَ اللّٰه **!** ख़ुश नसीब ग़ुलाम का ईसार सद करोड़ मरह़बा ! उस के ईसार का दुन्या में भी किस क़दर उ़म्दा सिला मिला कि दम ज़दन में आज़ाद हो कर बाग़ का मालिक बन गया। ख़ैर येह तो इन्सान था, एक कुत्ते के ईसार की अ़जीब ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे बा'ज़ सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं **:** हम "त़-रसूस" से जिहाद के लिये रवाना हुए, शहर से एक **कुत्ता** भी पीछे हो लिया। जब शहर के दरवाज़े से बाहर निकले तो वहां एक मरा हुवा जानवर पड़ा था, हम एक बुलन्द जगह पर बैठ गए, वोह **कुत्ता** शहर की त़रफ़ चला गया, कुछ देर बा'द वापस आया तो अकेला नहीं था, उस के साथ तक़रीबन **20 कुत्ते** मज़ीद थे, आते ही सारे मुर्दार पर झपट पड़े मगर वोह **कुत्ता** दूर हट कर बैठ गया और देखता रहा। जब वोह खा चुके तो चले गए ! येह **कुत्ता** उठा और बची खुची हड्डियां नोचने और खाने लगा, फिर वोह भी वापस चला गया। (ऐज़न, स. 319)

दम तोड़ते वक़्त भी ईसार !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुत्ते की ईसार की ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार म-दनी फूल हैं, गोया कुत्ता हमें नेकी की दा'वत देते हुए ज़बाने ह़ाल से कह रहा है कि मैं तो कुत्ता हो कर भी ईसार

का जज़्बा रखता हूं, मुझे हक़ीर समझ कर धुत्कारने वालो ! तुम तो ज़रा ईसार कर के दिखाओ। अफ़्सोस ! हमारी हालत बहुत पतली हो गई है वरना हमारे अस्लाफ़ ऐसे न थे, वोह तो दुन्या से जाते जाते भी ईसार के नुक़ूश छोड़ जाते थे चुनान्चे **हज़रते** सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **यरमूक** की जंग में बहुत से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शहीद हो गए। मैं पानी हाथ में लिये ज़ख़्मियों में अपने **चचाज़ाद भाई** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तलाश कर रहा था, आख़िर उसे पा लिया, वोह दम तोड़ रहे थे, मैं ने पूछा : ऐ इब्ने अ़म ! या'नी ऐ चचाज़ाद भाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप पानी नोश फ़रमाएंगे ? कप-कपाती हुई आवाज़ में आहिस्ता से कहा : जी हां। इतने में किसी के कराहने की आवाज़ आई, जां बलब चचाज़ाद भाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इशारे से फ़रमाया : पहले उस ज़ख़्मी को पानी पिला दीजिये। मैं ने देखा वोह **हज़रते हिशाम बिन आ़स** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे, उन की सांस उखड़ रही थी मैं उन्हें पानी के लिये पूछ ही रहा था कि क़रीब ही किसी ने आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची। हज़रते हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : पहले उन को पिलाइये, मैं जब उन **ज़ख़्मी** के क़रीब पहुंचा तो उन को मेरा पानी पीने की हाजत न रही थी क्यूं कि वोह शहादत का जाम पी चुके थे। मैं फ़ौरन हज़रते हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तरफ़ लपका मगर वोह भी शहीद हो चुके थे। फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तरफ़ पहुंचा तो वोह भी शहादत पा चुके थे। (کیمیائے سعادت ج۲ ص ٦٤٨) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का **जज़्बए ईसार ! अल्लाह ! अल्लाह !** दम लबों पर है मगर हर एक की येही आरज़ू है कि मुझे पानी मिले या न मिले बस मेरा इस्लामी भाई सैराब हो जाए और इसी त़रह़ एक दूसरे पर पानी का **ईसार** करते हुए तीनों पानी पीने के बदले शहादत का जाम नोश कर जाते हैं ।

पानी का ईसार करने वाला जन्नती हो गया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 404 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''ज़ियाए स-दक़ात''** सफ़ह़ा 260 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दो शख़्स सह़रा से गुज़र रहे थे, उन में एक इ़बादत गुज़ार था जब कि दूसरा गुनहगार, तो आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) को प्यास लगी यहां तक कि वोह शिद्दते प्यास से गिर पड़ा तो उस के साथी ने उसे देखा कि वोह बेहोशी की ह़ालत में पड़ा हुवा है, उस ने सोचा कि ''अगर येह नेक बन्दा मर गया ह़ालां कि मेरे पास पानी भी है, तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मैं कभी भलाई न पा सकूंगा, और अगर मैं ने इस को पानी पिला दिया तो मैं मर जाऊंगा ।'' बहर ह़ाल उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया और (उस आ़बिद की मदद का) इरादा किया कुछ पानी उस पर छिड़का बाक़ी उसे पिला दिया तो वोह खड़ा हो गया और (दोनों ने) सह़रा तै़ कर लिया । (मरने के बा'द जब) गुनहगार का ह़िसाब होगा तो उसे जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाएगा । उसे फ़िरिश्ते ले कर चलेंगे,

www.dawateislami.net

उसी लम्हे उस की नज़र (उसी) नेक बन्दे पर पड़ेगी, वोह कहेगा : ऐ फ़ुलां ! क्या तूने मुझे पहचाना ? तो वोह (आ़बिद) कहेगा : तू कौन है ? कहेगा : मैं वोही हूं जिस ने बियाबान वाले दिन तेरी जान बचाई थी ! तो वोह कहेगा : हां हां पहचान गया । तो वोह नेक बन्दा फ़िरिश्तों से कहेगा : ठहरो ! तो वोह ठहर जाएंगे । फिर रब तआ़ला से दुआ़ करेगा, अ़र्ज़ करेगा : ऐ परवर्द गार ! तू उस शख़्स का मुझ पर एह़सान जानता है, कैसे उस ने मेरी जान बचाई थी ! ऐ रब ! उस का मुआ़-मला मुझे सोंप दे । तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा वोह तेरे ह़वाले, फिर वोह नेक बन्दा आएगा और अपने (पानी पिलाने वाले) भाई का हाथ पकड़ कर **जन्नत** में ले जाएगा । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۱٦۷حدیث ۲۹۰٦)

www.dawateislami.net

ईसार की म-दनी बहार

एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली एक **म-दनी बहार** मुख़्तसरन अ़र्ज़े ख़िदमत है : बम्बई के एक अ़लाक़े में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (पीर शरीफ़ 22 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1428 हि. ब मुत़ाबिक़ 12.3.2007) के इख़्तिताम पर एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुम शु-दगी की शिकायत की । ज़िम्मेदार इस्लामी बहन ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की । वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए अभी तक़रीबन सात ही माह हुए थे, उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि **''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ात़िर मैं इतनी**

क़ुरबानी भी नहीं दे सकती !'' ब इस्रार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और ख़ुद पा बरहना (या'नी नंगे पाउं) घर चली गई । रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखती है कि **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जल्वा फ़रमा हैं, नीज़ एक **मुअ़म्मर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजाए क़दमों में हाज़िर हैं । **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईसार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ ''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती !'' हमें बहुत पसन्द आए । (इ़लावा अज़ीं भी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** के ''म-दनी माह़ोल'' में ''ईसार'' की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहार** है ! नीज़ ईसार की फ़ज़ीलत के भी क्या ही अन्वार हैं ! दो जहां के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर बहार है : **''जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर** (दूसरे को) **तरजीह़ दे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है ।''**

(اِتحافُ السّادَة للزّبيدی ج۹ ص ۷۷۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप अपनी आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये हर माह सिर्फ़ तीन दिन की क़ुरबानी नहीं दे सकते ? मक़ामे ग़ौर है ! क्या **दा'वते इस्लामी**

की ख़ातिर इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकते ?

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमें ख़ुश दिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब ख़ूब **ईसार** करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा और हमें मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला इ़नायत कर और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जगह अ़त़ा फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल

नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"म-दनी हुलिया अपनाओ" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी फूल

पहले **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ❁ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطّبرانی ج۲ص۵۹حدیث ۲۰۵۴) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस को (या'नी शर्मगाह) देख न सकेंगे (मिरआत, जि. 1, स. 268) ❁ जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ[1] तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे (ابوداؤد ج٤ ص٥٩ حدیث ٤٠٢٣) ❁ जो बा वुजूदे कुदरत अच्छे कपड़े पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के तौ़र पर छोड़ दे, **अल्लाह** तआ़ला उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा (اَیضاً ص۳۲۶حدیث ٤٧٧٨) ❁ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

1 तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी त़ाक़त व कुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़ता किया।

का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता (كَشْفُ الاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس لِلشَّيْخ عبدالْحَقّ الدّهلَوی ص٣٦) ❁ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (اَيضاً ٤١) ❁ **मन्कूल है :** जिस ने बैठ कर इमामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं। (اَيضاً ص ٣٩) ❁ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) म-सलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (اَيضاً ٤٣) ❁ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंग्लियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٥٧٩) ❁ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिरआत, जि. 6, स. 94) ❁ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल

www.dawateislami.net

सफ़ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक ''औ़रत'' है, या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۲ص۹۳) इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि **पेड़ू** (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है, अगर कुरते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक़्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त) ख़ुसूसन ह़ज व उ़म्रे के एह़राम वाले को इस में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है ❁ आजकल बा'ज़ लोग सरे आ़म लोगों के सामने नेकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है। बिल ख़ुसूस खेलकूद के मैदान, वरज़िश करने के मक़ामात और साह़िले समुन्दर पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में सख़्त एह़तियात़ ज़रूरी है ❁ **तकब्बुर** के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है।

(رَدُّالْمُحتارج ۹ ص ۵۷۹, बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 409)

म-दनी हुलिया

दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो) कली वाला सफ़ेद कुरता सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर। नीज़ सर पर सफ़ेद चादर और **म-दनी इन्आमात** पर अमल करते हुए पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना।

इस्लामी बहनें शर-ई पर्दा करें और ज़रूरतन बिल्कुल सादा बिग़ैर कढ़ाई का म-दनी बुरक़अ़ इस्ति'माल करें।

www.dawateislami.net

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और **म-दनी हुलिये** में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों और म-दनी बुरक़अ़ वाली इस्लामी बहनों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे महबूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह !** सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में

लग रहा है म-दनी हुलिये में वोह कितना शानदार

ह़ज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

17 रबीउ़ल ग़ौस 1432 हि.

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن	ضیاءالقرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت
تفسیر طبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
تفسیر درمنثور	دارالفکر بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاءالقرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر نسفی	دارالمعرفۃ بیروت	احیاءالعلوم	دارصادر بیروت
تفسیر خازن	اکوڑہ خٹک	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ تہران
خزائن العرفان	رضا اکیڈمی بمبئی	اتحاف السادۃ المتقین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کشف الالتباس فی استحباب اللباس	داراحیاءالعلوم باب المدینہ کراچی
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	المواہب اللدنیۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	درمختار	دارالمعرفۃ بیروت
سنن ابوداود	داراحیاءالتراث العربی بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
سنن ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	101 مَدَنی پھول	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم کبیر	داراحیاءالتراث العربی بیروت	ضیائے صدقات	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فیضانِ زکوٰۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حدائقِ بخشش	رضا اکیڈمی بمبئی
حسن الظن باللہ مع موسوعہ ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में ***मक-त-बतुल मदीना*** *के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।*

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बच्चे के रोज़े का अहम तरीन मस्अला	21
ईसार की ता'रीफ़	3	उहुद पहाड़ जितना सोना हो तब भी	22
अंगूरों का ईसार	3	सुन्नतों के डंके बजाने वालो !	22
बचपन शरीफ़ की अदाए मुस्त़फ़ा	4	आग के कंगन	23
हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे	5	बीबी फ़ात़िमा का ईसार	24
आयत की तश्रीह़	5	खिलाने पिलाने का अ़ज़ीमुश्शान सवाब	24
शकर की बोरियां	5	अनोखा दस्तर ख़्वान	25
पसन्दीदा बाग़	6	अपनी ज़रूरत की चीज़ दे देने की फ़ज़ीलत	26
उ़म्दा घोड़ा	8	ईसार का सवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े	27
फ़ारूक़े आ'ज़म को कनीज़ पसन्द आई तो आज़ाद कर दी	9	ईसार का सवाब बे ह़िसाब जन्नत	28
अबू ज़र ग़िफ़ारी का उ़म्दा ऊंट	10	जब जन्नत की दुआ़ देता हूं तो	
माल से तीन त़रह़ के फ़वाइद मिलते हैं	13	माली ईसार से क्यूं रुकूं !	28
वारिस का माल	14	बकरी की सिरी	29
म-रज़ुल मौत में भी ईसार	14	कुत़्बे मदीना ने ईसार करने वाले	
सख़ावत में ह़ैरत अंगेज़ जल्दी	15	ताजिर की ह़िकायत बयान फ़रमाई	29
नेकी में जल्दी करनी चाहिये	16	निराले डाकू	30
रुक़्आ़ पढ़े बिग़ैर दर-ख़्वास्त मन्ज़ूर कर ली	16	अपना खाना कुत्ते पर ईसार कर दिया !	32
दिल दौलत से नहीं भलाई से ख़रीदा जा सकता है	17	कुत्ते के ईसार की अ़जीब ह़िकायत	33
सख़ी वोह नहीं जो सिर्फ़ मांगने पर दे	18	दम तोड़ते वक़्त भी ईसार	33
दोस्त की ख़बर गीरी न करने पर अफ़्सोस	18	पानी का ईसार करने वाला जन्नती हो गया	35
निराली मेहमान नवाज़ी	19	ईसार की म-दनी बहार	36
आक़ा दूसरे दिन के लिये खाना न बचाते	20	लिबास के 14 म-दनी फूल	39

www.dawateislami.net